

ऐसे कलीन धर्म तथा गुण कलीन धर्म के व्यवहार का तुलनात्मक सम्पर्क कीजिए।

इसलेख के प्रयोग ⇒
इसके धर्म के सम्पर्क कीधर्म के विभिन्न उपायों का मूल्यांकन कीजिए।
इसके धर्म के गुण काल में समाज जन द्वारा स्वर्ण सिक्कों के बदलेभाल का एक विवरण प्रस्तुत कीजिए।

पूर्व मध्यकालीन समाज के लिए भारतीय सामंतवाद शब्द की अनुपयोगता।

क्रीष्ण अभियान
Ji Sarai New Delhi-16
Mob. 9818909565

Introduction with Thesis

सामंतवाद एक पुरोपीप अवधारणा है, किन्तु ऐसे पुरोपीप समाज के व्यवहार में भी इस अवधारणा का उपयोग हुआ है। भारतीय समाज इसका उपयोग नहीं है इस विद्वान् भारत में सामंतवाद की व्यापकता के रचनाकार करते हैं तथा उसे भाषि अनुशासन, वाणिज्य व्यापक के इन तथा बाह्य आङ्गमण जैसी छातनाओं से जोड़कर देखते हैं किन्तु इस अन्य विद्वानों ने भारत में सामंतवाद की व्यापकता को अस्वीकार कर दिया तथा पूर्व मध्यकाल की व्याप्ति समान्वित राज्य की अवधारण के सन्दर्भ में करने का प्रयास किया है अब अग्रहम इस व्यय का परीक्षण करते हैं तो हमें पहचान होता है कि इस मध्यकाल में भी भारत में राजनीतिक आपीकृ दलों में इस ऐसे परिवर्तन हुए जिन्हें हम सामंतवाद के विकास से जोड़ सकते हैं चाहिए। इसका स्वरूप पुरोपीप सामंतवाद से पूर्वक रहा है।

इसका भल भारतीय इतिहास स्वर्णपुग या क्या आप सहमत हैं।

इनके बीच भारतीय इतिहास वरन् विश्व इतिहास में भी कई कालों के लिए स्वर्णपुग शब्द का उपयोग होता रहा है भारतीय इतिहास में इनकाल, चौल काल इत्यं मुगलकाल के लिए स्वर्णपुग शब्द का प्रयोग

हुआ है विश्व इतिहास में पौरी क्लोज का काल तथा इलेंड में दलीजा वेप का काल। किन्तु वर्तमान में इतिहास में मूल्यांकन की सवधारणा बदल चुकी है अब किसी भी काल की सफलता आभिजात एवं कुलीनों की संवृद्धि के आधार पर नहीं निर्धारित की जाती बरन जनसामान्य की विधिति के आधार पर आकी जाती है महीने हैं जिनका ग्रुप काल के मूल्यांकन में रखेंगा ऐसी अवधारणा पर किसे विचार करने की ज़रूरत है।

Development of Ideas -

- ① आभिजात्य और डुलीनों के आधार पर यह काल स्थानिक सफलता का काल प्रतीत होता है। सामाजिक निर्माण, कांडियां
- ② किन्तु जनसामान्य की दशा अच्छी नहीं थी-
 - (a) आर्थिक दौर से अवगति
 - (b) समाज में वर्ष्यवरण की जातेलता, महिलाओं की सामाजिक दशा में गिरवट तथा अद्वैती की दुर्दृष्टि
- ③ कला और साहित्य भी डुलीन और आभिजात्यों की संवृद्धि को बताते हैं जनसामान्य की विधिति पर्याकाश भी डालते।

निष्कर्ष - Restatement of Idea of Restament of Thesis

इस प्रकार हम देखते हैं कला और साहित्य जनसामान्य पर प्रकाश नहीं डालते और फिर सामाजिक और आर्थिक दौर में त्रिप्रविभाजन विद्यमान रूपा जनसामान्य की विधिति अच्छी नहीं पी डाले हम गुण काल को रखेंगा नहीं कह सकते।

प्राचीन भारत का इतिहास

(2)

१. अध्ययन के खोले ① पुरातात्विक वेब अन्वेषण और उत्थानों

में - पुरातत्व में अन्वेषण और उत्थान क्या हैं। उत्थान की कितनी घटकार की विधियाँ प्रचलित हैं (300 शब्द)

② पुरातात्व, मुद्रा एवं स्मारक

में - आभिलेख और मुद्राओं के अध्ययन के बिना प्राचीन भारत के इतिहास का पुनर्निर्माण अत्यधिक कठिन है (600 शब्द)

③ शैमन - साहित्यिक साक्षय

④ धार्मिक और छिनीपक खोले

में - धार्मिक और छिनीपक खोल से आप क्या समझते हैं प्राचीन काल के अध्ययन में धार्मिक खोल से सम्बन्धित विज्ञान साहित्य पर प्रकार डालिए (600 शब्द).

⑤ प्राचीन काल के इतिहास के अध्ययन में क्षेत्रीय साहित्य का प्रोग्राम

⑥ प्राचीन काल के इतिहास के अध्ययन में धार्मिक और धर्मेत्तर साहित्य का प्रोग्राम

⑦ प्राचीन काल के इतिहास के अध्ययन में विदेशी वर्षों की भूमिका (ग्रीकरोमन, चीनी, अरबी)

⑧ ① पुरा पाषाण काल और मध्य पाषाण काल \Rightarrow शिकार और खाद्य प्रसंग

⑩ भारतीय कृषक एवं पशुपालक \Rightarrow नव पाषाण काल और ताप पाषाण काल

③ हड्डपा सम्भता \Rightarrow उद्गमव. काल, विस्तार, विशेषताएँ, अपेक्ष्यवर्त्त्या.

④ उत्तर प्रदीविता और महत्व, प्रतिन

मेंगालीयिक संस्कृतियाँ \Rightarrow (मात्रव)

⑤ हड्डपा सम्भता से बाहर की कृषक संस्कृतियाँ

प्रदीवित क सम्भता \Rightarrow (1500 ई० पू० - 500 ई० पू०) ⑥ वैदिक आर्यों का भौतिकीय

प्रसार

ऋग्वेदिक से उत्तर प्रदीवित काल तक राजनीतिक आर्यों का सामाजिक रूप सम्भव

वैदिक काल में धर्म और दर्शन का विकास

वैदिक सम्भता का महत्व

वर्ण व्यवस्था एवं राजतन्त्र का क्रामिक विकास

- ⑥ महाजनपद काल 600 ई०प० - 400 ई०प० \Rightarrow लिखीत साम्राज्य भड़ी तथा
 ⑨ नन्दों के काल तक सर्वोच्च साम्राज्य का प्रसार तथा उसकी सफलता $\frac{1}{2}$ ई०
- ⑥ गणतन्त्र रूप उनके पतन के कारण
 ⑦ बुद्धभूगीन अर्पणवरण \Rightarrow कृषि का विस्तार, शिल्प रूप वाणिज्य व्यापार,
 मुद्रा अर्थव्यवस्था, नगरीकरण
 ⑧ भौमि काल \Rightarrow (400 ई०प० - 200 ई०प०)
 ⑨ कीटिल्प का अर्पणशास्त्र, मेगाघनीय की इण्डिका तथा अशोक के
 आभिलेख (अधिकार स्वीकृति तथा मृत्यु)
- ⑤ भौमि साम्राज्य का प्रसार
 ⑥ भौमि कालीन अर्थव्यवस्था
 ⑦ अशोक की धर्मनीति तथा अशोक की विदेशनीति
 ⑧ भौमि कला, रथापत्य कला और मूर्तिकला
 ⑨ भौमि साम्राज्य का पतन
- ⑩ भौमितर काल \Rightarrow (200 ई०प० ते 300 ई०)
- ① उत्तर भारत में —
 ② इण्डो-ग्रीक शाक और कुछाप राजवंश, द्युंग और कृष्ण वंश
 ③ कृषि अर्थव्यवस्था तथा, वाणिज्य रूप व्यापार, मुद्रा अर्थव्यवस्था तथा
 नगरीकरण
 ④ समाज रूप धर्म तथा महाभास्तु तथा का विकास
 ⑤ भौमितर काल रथापत्य कला और मूर्तिकला
- ⑪ दक्षिण भारत \Rightarrow
 ② सातवाहन, खारवेल तथा संगम राजवंश
 ③ भ्रामी अनुदान तथा कृषि अर्थव्यवस्था का प्रसार
 ④ शिल्प, वाणिज्य व्यापार, मुद्रा अर्थव्यवस्था रूप नगरीकरण
 कला - रथापत्य कला और मूर्तिकला
 ⑤ संगम समाज रूप सरकृति

(2)

प्रयत्न करता है। फिर भी इतिहास चल्प के द्वय में
उसकी कृति अनुपम है। वह राजवंशवार की धृत्याओं
के ऑकन तक ही सीमित नहीं है। वरन् वह समकाली
ने समाज पर भी प्रकाश डालता है। आगे जीनराज
एवं प्रजाभट्ट शुक्र जैसे लैणकों की चर्चात्मेम राजतरीकी
लिखाकर कठ्ठण की परम्परा को छोड़ने का प्रयत्न
किया किन्तु उनके लैणमें में वह विश्वसनीपता नहीं
आ पायी जो कठ्ठण के लैणमें है।

Ques ⇒ भारत के सामाजिक इतिहास को पुनर्निर्माण करने
में पुनानी रोमनो और चीनियों के बहाने किस पकार
सहायक है? उनके हारा दी गयी चर्चना की अन्य
समकालीन सौतों के हारा किस सीमातक परिपूर्ण
होती है।

Ques ⇒ विदेशी विवरण के विना प्राचीन भारत के इतिहास
का अध्ययन अत्यधिक कठिन है। इस कथा का परीक्षण
कीजिए।

Ques ⇒ प्राचीन काल के इतिहास के अध्ययन में जहाँ
साहित्य मौजूद है वहाँ पुरातत्व बोतलता है। इस कथा
का परीक्षण कीजिए। (300 w)
(पुरापाषाण काल आप ऐतिहासिक + इत्यासभ्या)

बीघरी PHOTOSHOP
Jia Sarai New Delhi-11
Mob.: 9818809565

मध्यकालीन इतिहास

सल्तनत काल ⇒

लघु निवंध ⇒

- ① राजेपा सुल्तान, जो एक विफल शासक थे।
- ② इल्तुतमिश्चा ने तुर्क-ए-चहलगानी के साम्यम से अपने विनाश का बीज बो दिया।
- ③ बलबा के राजत्व की अवधारणा तथा उसका विप्रात्वमें
- ④ छिलजी कान्ति शौद्ध की प्रयोजनीयता
- ⑤ अलाक्दीन छिलजी की राजत्व की अवधारणा उसकी सामाजिक वादी महात्वाकांक्षा से उत्तीरित थी।
- ⑥ अलाक्दीन छिलजी की बाजार नियंत्रण चक्र उसकी सेविक भवात्वाकांक्षा का परिणाम थी।
- ⑦ अलाक्दीन छिलजी के अन्तर्गत आमीर कान्ति की अवधारणा का औचित्य।
- ⑧ अलाक्दीन छिलजी एक अनोखा सामाजिक वादी था।
- ⑨ PST एक पांगल सुल्तान था।
- ⑩ PST के लोककल्पण कारी कार्य
- ⑪ दिल्ली सल्तनत के सुट्टीकरण में PST की नीतियों की भूमिका इतिहासकारके स्वरूप में वरनी और आमीर पुसरो के तुलनात्मक भवत्व।
- ⑫ विदेशी सम्पर्क एवं इनवेटलों का वर्णन
- ⑬ सल्तनत का विकास
- ⑭ सल्तनत के अधीन सभान्वय संरक्षित का विकास
- ⑮ सल्तनत के अधीन व्यापार खेत वापिश्य
- ⑯ सल्तनत काल में नगरीय क्षान्ति शौद्ध का औचित्य
- ⑰ सल्तनत के अधीन निरुद्ध आक्री का विकास
- ⑱ सल्तनत काल में चिलकला का विकास

- (21) सलतनत काल में चित्रकला का विकास।
- (22) कश्मीर और-कल आवाज़ी।
- (23) बहमनी राज्य।
- (24) विजयनगर के अन्तर्गत नायंक पृष्ठी।
- (25) विजयनगर रूचापत्त्य।
- (26) सुफी मत कज़ा मोगदान।
- (27) लोदी वंश।
- (28) पुर्णाली औपनिवेशीकृत प्रतिष्ठान।
- (29) शेरशाह के अन्तर्गत सामाजिक सुधार।

दीर्घ उत्तरीय पश्चिम ⇒

- (1) शेरी के आक्रमण तथा गोरी की सफलता के पीछे कारण।
- (2) गोरी के आक्रमण का आर्थिक, सांस्कृतिक एवं सामाजिक परिणाम।
- (3) इल्हुत मिशा की उपलब्धियों का मूल्यांकन।
- (4) बलबन की उपलब्धियों का मूल्यांकन।
- (5) अलादेहीन गोलाजी-सामाजिक वादी प्रसार, प्रशासनिक सुधार; आर्थिक सुधार, अकबर से तुलना।
- (6) MBT - सामाजिक वादी प्रसार, प्रशासनिक उपयोग एवं सुधार। MBT के विष्ट विदेह, सामाजिक के विधान में MBT की भूमिका।
- (7) FST - राजत्रि की नवीन अवधारणा तथा लोककल्पाणकारी राज्य, आर्थिक वित्तीय सुधार, सांस्कृतिक मोगदान, सलतनत के विधान में FST की भूमिका का मूल्यांकन।
- (8) शेरशाह - सद्द सामाजिक प्रशासनिक सुधार, आर्थिक सुधार अकबर के प्रबंगामी के स्पष्ट में शेरशाह का मूल्यांकन।

⑨

सल्तनत कालीन पश्चासन - केंद्रीय प्रशासन, इस्ला प्रशासन
स्थानीय प्रशासन तथा भूराजर्ख प्रशासन

⑩

सल्तनत कालीन अर्पण्यवस्था - कुष्ठितपाल, कुष्ठितर
उत्पादन का उद्भव, व्यापार एवं बाणिज्य तथा नगरीय
अर्पण्यवस्था।

⑪

भारती आनंदोलन का विकास तथा मोगदान

⑫

खफी आनंदोलन का विकास तथा मोगदान

⑬

विजयनगर, प्रशासन, संरक्षण, कला एवं साहित्य

(Ans) ①

आरम्भिक तुकी सुलतानी की चुनौतियों तथा उपलब्धियों
का आकलन कीजिए।

(Ans) ②

दिल्ली सल्तनत की स्थापना के आर्मिक एवं सांख्यिक
प्रभाव को दर्शाइये।

(Ans) ③

दिल्ली सल्तनत के महवे का आकलन कीजिए।
भारत के इतिहास में खिलजी शासन के मोगदान
पर टिप्पणी कीजिए।

(Ans) ④

MBT तथा PST दोनों के व्यावधियों का तुलनात्मक
अध्ययन करते हुए पठनिर्धारित कीजिए कि आप
दोनों में किसे मौजूद मानते हैं।

(गीरी स्त्री सफलता के कारण - राजधानी के परोंजेप बैकाय
(TOP NOTES)

जाधुनिक भारत के अध्येतरन में प्रचलित विभिन्न हावटी कोण

संभाषण वाली हावटी कोण =>

इस हावटी कोण के विकास में ब्रिटिश आधिकारी वर्ग की ओर भूमिका रही डफरिन, कर्जन तथा मिष्टो की घोषणाओं में फि वेलेंटाइन शीरोल जैसे ब्रिटिश आधिकारियों के विवरण में इस हावटी कोण को घोषा जा सकता है आगे ए. गलहर तथा पर्सीवर स्पीयर जैसे विद्वानों ने इस हावटी कोण को जोखाएँ दिया। यह हावटी कोण मह स्पायित करने का प्रयत्न करता है कि भारत में ब्रिटिश विजय सुनिषोलित नहीं बरन आकामी या दूसरे शब्दों में ब्रिटिश के अस्त जीतने की कोई सोजना नहीं थी उसी प्रकार पह राजनीतिक आर्थिक तथा सांस्कृतिक ढाँचे के रूप में भारत के उपनिवेशों के आन्वीकार करता है इसका मानना है कि भारत में उपनिवेशों मही या आगरका तो केवल विदेशी व्यासन फिर भारत में उपनिवेशों नहीं या तो राष्ट्रवाद भी नहीं था अतः पह भारत में राष्ट्रवाली आनंदोलन को महज एक हड्डम संघर्ष का नाम देता है भारतीय राष्ट्रीय आनंदोलन की व्याख्या संरक्षक संरक्षित संवत्यों के संरक्षण में भी काने का प्रयास किया गया तथा राष्ट्रवाद को नौकरी पाने तथा नये आर्थिक औद्योगिक को प्राप्त करने जैसे नियन्त्रण की अवधारणा से खोड़ा गया।

नव कैन्सिज दृष्टिवाल लैण्ड

1973 के बाद स्कॉन्सा विद्वानों का एक नया वर्ग आया है जिन्हें हावटी परिवर्तन की सुचनाओं की इनका यह मानना था कि प्रान्त और वर्ग की जगह दोनों ओर गुट का अध्यय-

शोधक फोटोस्टॉल
Jai Sarai New Delhi-16
Mob. 9818909565

किया जाना पाहिए दस्ती के साप मालों हृषी की पहारी
आरम्भ हुई क्रिस्टोफर वापली, जानसन, गार्डन, अमूडिप्रांगन
जूदे विद्वानों ने अलग-2 श्रेष्ठ का अध्ययन किया कि-तु
मोलिक बातों में इन विद्वानों का हालिंगोन पूर्व सामान्यवादी
लेखकों से अलग नहीं था इनके विश्लेषण का तरीका थोड़ी
परिवर्तन हो गया विद्वान का उद्देश्य भारत में विदेश
शासन का औपचार्य सिद्ध करता है क्रिस्टोफर वापली
को होड़का ब्रसर कोई भी विद्वान भारत में राष्ट्रपति की
पहचान को स्वीकार नहीं करता।

राष्ट्रवादी हृषीकोण

राष्ट्रवादी हृषीकोण भारत में औपचार्यवाद की पहचान
को स्वीकार करता है तथा पहले स्थापित करने का प्रयत्न
करता है कि विदेशी औपचार्यवादीक हित और भारतीयों
के नहीं के बीच मोलिक विरोधभाष पा राष्ट्रपति का
विकास राष्ट्रीयता की अवधारणा वे प्रसार के काल
हुआ राष्ट्रपति विद्वानों से आमिको चरण मधुमदार गोलिया
प्रसाद मुकर्जी, सुरेन्द्रनाथ बनर्जी आदि थे फिर वर्तमान में
3-मलेश: विप्राची द्वारा हृषीकोण से सम्बद्ध है। किन्तु
राष्ट्रवादी हृषीकोण की एक प्रमुख सीमा पह है कि वह
जातीय एवं वर्गी के स्तर में भारतीय समाज के सातांश
विरोधभाष को उत्तीकार करता है तथा पह मानता
है विदेशी के विद्वान् सभी भारतीयों के हित एक है।

मार्क्सवादी हृषीकोण

मार्क्सवादी हृषीकोण ने अप्रृत हृषीकोण में रुधार लाया
हस्ते हारा पहले स्थापित करने का प्रयत्न दिया गया कि

विरोधाभाष एक नहीं आपि विरोधाभाष दों ये प्रथम
विरोधाभाष या प्राप्तिक विरोधाभाष तो द्वितीय विरोधाभाष
या द्वितीयक विरोधाभाष, प्राप्तिक विरोधाभाष त्रितीय
और चौथी विरोधाभाष जनता के छहें के बीच
या ती द्वितीयक विरोधाभाष भारतीय समाज के अ-प्रथम
दो गणों के बीच छहें की तकराहतों को दर्शाता है ये वो
जो जमीदार और किसान द्वारा पारी करी और कोपक वा आर
आरामिक मावसिवादी विद्वानों में M.N.Rai, रघुपीपाम जै।
तथा इन आरामिक प्रमुख ये किन्तु इनके लेखन में हम
प्राप्तिक विरोधाभाष तथा द्वितीय विरोधाभाष के बीच
अधित संतलन नहीं देखते आगे विधि च-ड, भारदिप मुबली
मुकुला मुबली आँड़ि के लेखन में प्राप्तिक विरोधाभाष जो
द्वितीयक विरोधाभाष के बीच आधिक वैहतर संतलन देखते
को मिलता है।

सबाल्टन हाउटीकोण (उपाध्यवादी हाउटीकोण) ⇒

इलका विकास मावसिवादी हाउटीकोण ऐ ही हुआ है
सबाल्टन शा०८ के जनमदाता द्वारा इटीलिपन मावसिवादी लेखक
संतीनीपी शा०८ सी. है इस हाउटीकोण का विकास १९८० के दशक
में हुआ बंजीत शुद्धा इस हाउटीकोण के आरामिक संस्थापक है
फिर पार्षद चट्टानी ने भी इस हाउटीकोण का विकास किया
सुभित सरकार भी इस हाउटीकोण के प्रभाव में लिखते रहे हैं
सबाल्टन छतीदास लेखन ने दूबी कला के समर्त लेखन को
आधिकारिक लेखन कठकर अधिकार कर दिया क्योंकि भाषा
या कि चाहे सामाज्यवादी है या राष्ट्रवादी अथवा
मावसिवादी उपर्युक्त सभी एक समाज दोष के बीकर हैं
और वह कि सबों में नेतृत्व की भूमिका को बनायें।

कर आका है जिसके विचार में नेता जनसमुदाय को
निपंत्ति नहीं करता वरन् जनसमुदाय का दबाव नेतृत्व
को दिशा देता है इन्होंने भारतीय राजनीति को बोला
समझो में बातों आभीजात्य समृद्ध तथा दलित समृद्ध
फिर इन्होंने दलित वर्ग की चेतना के अध्ययन पर कल-
शिक्षा द्वारा एक हाउस से देखा जाय तो कई वाज्ञाएँ
सवाल्टन इतिहास लेखन कोषिष्ठ इतिहास लेखन के
निकट आ जाता है कोषिष्ठ इतिहास लेखन ने भारत
में राष्ट्रवाद को अखिकार किया उसी प्रकार सवाल्टनी
राष्ट्रवाद को अखिकार करते हैं तथा उसे एक आभी-
जात्य परिकल्पना करार देते हैं कोषिष्ठ इतिहास लेखन
की ही तरह सवाल्टनी भी इ माझे रुदी पर कल देते
हैं फिर भी दोनों में एक महत्वपूर्ण अन्तर है कि
कोषिष्ठ लेखक आभीजात्य वर्ग में केवल मातृत्व आभीजात्य
वर्ग की बात करते हैं अब कि सवाल्टन लेखक आभीजात्य
वर्ग में मातृत्व रुप वितरा दोनों को शामिल करते हैं
तथा दलित वर्ग के साथ उनके इन्होंने का विरोध
भाषण दिया है।

प्रैरब शताब्दी

जन्म मात्रा दी।

①

डातीहास के त्रिपारी का अर्थ है राजनीतिक, सामाजिक एवं सांस्कृतिक क्षेत्र में निरन्तरता एवं स्वतंत्र परिवर्तन के त्रिपोकों को ऐकित्त करना।

राजनीतिक =>

- ① राजनीतिक विराम
- ② राजत्व की अवधारणा
- ③ प्रशासन

आर्थिक =>

कृषि, वित्त, उद्योग, वाणिज्य, व्यापार

सामाजिक =>

संस्कृति =>

- ① धर्म
- ② दर्शन
- ③ कला

स्टॉरी PHOTOSHOP

Jia Saree New Delhi-11
Mobile: 9818909565

① क्षेत्र परिवर्तन

→ राजनीतिक परिवर्तन

→ आर्थिक परिवर्तन

→ सामाजिक परिवर्तन

→ सांस्कृतिक परिवर्तन

क्षेत्र परिवर्तन

②

→ राजनीतिक

→ सामाजिक

→ सांस्कृतिक

→ आर्थिक

हितीप्रचरण ⇒

हितीप्रचरण के मध्यम में इतिहास लेखन का क्षान आवश्यक होता है। इतिहास लेखन के क्षान की जरूरत न केवल प्रश्न का उत्तर लिखने के लिए बरन प्रश्न समझे के लिए भी होता है।

हितीप्रचरण ⇒ एक तरह से अगर देखा जाय तो यह प्रश्न सावसे महत्वपूर्ण होता है क्योंकि इसीप्रचरण में विषय वस्तु के क्षान को अंक में तब्दील किया जा सकता है। और एक रचनात्मक परिप्रेक्षा है तथा हमके लिए एक निरन्तर अभ्यास की जरूरत होती है।

Ques ⇒ गुण काल में जनसामान्य के बारे सर्वे सिवको का प्रयोग।

Ans ⇒ सर्वे सिवको के प्रयोग की हाई से गुण काल विशेष ही क्योंकि पाचीन काल के इतिहास में गुण काल में ही सर्वाधिक सभ्या में सोने के सिवके जारी किये गये किन्तु हमें पहले उपान रचना चाहिए कि स्थृण उसिवको का प्रयोग आमीजात्य वर्ग तक ही सीमित नहीं जनसामान्य तक पहुँच पाया भही वर्जह है कि गुण काल के समर्थने से सर्वे उग ऐसी अवधारणा ने अपना अर्थ छोड़ दिया है।

एक स्तरीप्रचरण के निम्नलिखित पहल होते हैं—

① Introduction + Thesis — इसमें किसी प्रश्न पर अपनी दुकाव

(१)

को स्पष्ट किया जाता है।

- ② development of Tedium - इस भाग में अलग अलग प्रणाली में विभाजित कर विवरण को आगे बढ़ाया जाता है प्रत्येक प्रणाली में एक मुख्य विषय होता है जो Thesis को सिद्ध करना चाहता है। प्रणाली में विभाजित प्रश्न के आकार के आधार पर होता है अगर प्रश्न ८०० शब्दों का हो तो कम से कम तीन प्रणाली आविष्कृत से आधिक ऐच प्रणाली होता है किन्तु अगर प्रश्न ३०० शब्दों का हो तो तो प्रश्न दो प्रणाली में लिखा जा सकता है।

Transition → विभिन्न प्रणाली के बीच अस्ति आपस में जुड़ाव होता है जिसे है Transition कहते हैं अपार पहले प्रणाली की आतिथ पाकी तथा दूसरे प्रणाली की पहली पाकी के बीच निरन्तरता विद्यमान होती है।

प्रक्रिया - development

A Restatement of Ideas

B Restatement of Thesis

पाठ्यक्रम से बाहर \Rightarrow

प्राचीन एवं मध्यकालीन पूरोप रुपं सामाजिकं

- ① मुनान के भगर राष्ट्र तथा सिक्खर का सामाजिकं
- ② पश्चिम राजिपां में छत्तीस का उद्भव तथा अखं सामाजिकं
- ③ राजस्थान सामाजिकं एवं विजयेन्ट सामाजिकं
- ④ पवित्र रोमन सामाजिकं
- ⑤ इसाई धर्म एवं सर्वव्यापी चर्चापवह्या
- ⑥ यामतवाद का उद्भव
- ⑦ भौगोलिक अवधि
- ⑧ पुनर्जागरण
- ⑨ धर्म सुधार आनंदोलन
- ⑩ व्यक्साधिक कान्ति एवं वार्णीज्यवाद
- ⑪ राष्ट्रीय कलातंत्र का उद्भव

पाठ्यक्रम \Rightarrow

- ① प्रबोधन के विचार - काण्ट एवं रसो
- ② पूरोप से बाहर प्रबोधन का प्रसार
- ③ समाजवाद एवं भाक्सवाद, मार्क्स के प्रचार पूरोप में समाज वाद का प्रसार
- ④ अमेरिकी कान्ति तथा अमेरिकी संविधान
- ⑤ अमेरिकी गृह पुष्टि
- ⑥ फ्रंस की कान्ति तथा उसका प्रभाव (1789 - 1815)
- ⑦ 19वीं शताब्दी में राष्ट्रकान्ति का विकास
- ⑧ छत्तीस तथा जमनी में 20वीं शताब्दी राष्ट्र का उद्भव
- ⑨ विभेन राष्ट्रीयताओं के उद्भव के कारण लंसाजीका विद्युत - ओटोमन साम्राज्य, हैदराबाद साम्राज्य तथा छसी साम्राज्य